सम्पूर्ण प्रामाणिक पाठ

रूसी ग्रन्थमाला : पुस्तक पंद्रह

रसूल हमज़ातफ़

मेरा दग़िस्तान

अनुवादक

मदनलाल 'मधु'

रूसी ग्रन्थमाला के सम्पादक

अनिल जनविजय

रसूल हमज़ातफ़ जन्म शताब्दी पर विशेष

मेरा दाग़िस्तान

रूसी ग्रन्थमाला : पुस्तक सोलह

रूसी ग्रन्थमाला के सम्पादक : अनिल जनविजय

23 IV - 78
Т. Салахов.

रसूल हमज़ातफ़ जन्म शताब्दी पर विशेष

मेरा दग़िस्तान

रसूल हमज़ातफ़

अनुवाद : डॉ. मदनलाल 'मधु'

सम्पादक

अनिल जनविजय

अनुज्ञा

साभार – रादुगा प्रकाशन, मसक्वा

इस विश्व प्रसिद्ध कृति की प्रति रूस से हनी शर्मा ने उपलब्ध कराई है।
इसके लिये अनुज्ञा बुक्स हनी शर्मा का आभार व्यक्त करता है।

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© अनिल जनविजय

आवरण © अनुज्ञा बुक्स

पुस्तक-सज्जा © अनुज्ञा बुक्स

प्रथम अनुज्ञा संस्करण : 2024
प्रथम आवृत्ति : 100 प्रतियाँ

ISBN 978-81-19878-99-4

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192
www.anuugyabooks.com

अनुवाद : **डॉ. मदनलाल 'मधु'**

मुद्रक : अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

MERA DAGHESTAN
World Classic Russian Novel *authored by* ***Rasul Gamzatov***
Hindi translation by ***Dr. Madanlal 'Madhu'*** *& edited by* ***Anil Janvijay***

कास्पियन सागर के पास काकेशिया के पर्वतों की ऊँचाइयों पर इस पुस्तक के लेखक की जन्मभूमि– दग़िस्तान अवस्थित है। यहीं पहाड़ी गाँव त्सादा में 1923 में दग़िस्तान के लोक-कवि हमज़ात त्सादासा के परिवार में पुत्र रसूल का जन्म हुआ। 1937 में छपी हमज़ातोव की प्रथम कविताओं ने पाठकों का मन मोह लिया। तब से लेखक की कविताओं के दर्जनों संग्रह छप चुके हैं। लेनिन पुरस्कार विजेता, दग़िस्तान के लोक-कवि रसूल हमज़ातोव का नाम सोवियत देश ही में नहीं बल्कि विदेशों तक में प्रसिद्ध है। बहुजातिक सोवियत संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में हमज़ातोव सभी महाद्वीपों की यात्रा कर चुके हैं, विभिन्न देशों के पाठकों से उन्होंने भेंट की। अपने पाठकों और श्रोताओं को संबोधित करते हुए वह पूर्ण अधिकार के साथ कहते हैं : "तेरी तरह ही, मेरे समकालीन, मैं शताब्दी के मध्य में, विश्व के केन्द्र में, महान घटनाओं के भँवर में रहा ... घटनाओं के दुःख और उल्लास से चितेरे को अछूता नहीं रहना चाहिए। वे बर्फ पर निशान नहीं, पत्थर पर नक्काशी हैं। और मैं अतीत के अपने साक्ष्यों और भविष्य के अपने विचारों को एक ही पोटली में बाँधकर तेरे पास आ रहा हूँ, तेरा दर खटखटाता हूँ और कहता हूँ : मेरे भले मित्र, यह मैं हूँ। अंदर आने दो।"

ओर-छोरहीन आकाश में पहाड़ी उक़ाब

आपके हाथों में इस समय विश्व-प्रसिद्ध रूसी कवि रसूल हमज़ातफ़ की एकमात्र गद्य-पुस्तक 'मेरा दग़िस्तान' है। इस किताब में रसूल हमज़ातफ़ ने अपनी मातृभूमि, अपने देस का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने बताया है कि दग़िस्तानी जनता की संस्कृति, उसका मानस और दग़िस्तानी जनता का जीवन कैसा है।

भारत की जनता की तरह दग़िस्तानी जनता के जीवन-वस्त्र का ताना-बाना भी वैसे ही बुना हुआ है कि उसमें कुछ धागे उलझे हुए भी दिखाई देते हैं। दग़िस्तानी जनता के जीवन में भी शुभ और अशुभ, सगुन और असगुन साथ-साथ चलते हैं। दग़िस्तानी जनता का जीवन-दर्शन भी 'विभिन्नता में एकता' का दर्शन है। दग़िस्तान कोहेकाफ़ पर्वतमाला के पहाड़ों पर कास्पी सागर के किनारे बसा हुआ प्रदेश है। दग़िस्तान की राजधानी है मख़चकला। दग़िस्तान की कुल आबादी 32 लाख है, जो सौ छोटी-बड़ी जातियों व जनजातियों में बँटी हुई है। दग़िस्तान में चालीस से ज़्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं। कवि रसूल हमज़ातफ़ की मातृभाषा 'अवार भाषा' है, जो दग़िस्तान की सबसे बड़ी भाषा मानी जाती है। कुल दो लाख साठ हज़ार लोग 'अवार भाषा' का इस्तेमाल करते हैं।

हमज़ातफ़ शुरू से ही अपनी अवार भाषा में लिखते हैं। लेकिन जब उनकी रचनाओं का अनुवाद रूसी भाषा में होने लगा तो उनकी कविताओं का अनुवाद रूसी भाषा से सोवियत संघ की दूसरी भाषाओं में भी होने लगा। धीरे-धीरे रसूल हमज़ातफ़ सोवियत संघ में प्रसिद्ध हो गए। प्रसिद्धि मिलने के बाद विदेशी भाषाओं में भी उनकी कविताएँ सामने आने लगीं। एक छोटी-सी अवार भाषा का कवि रूसी भाषा के माध्यम से आज सारी दुनिया का कवि बन गया है। यह बड़ी बात है।

हमारी हिन्दी के पाठकों को इस किताब में वह सब कुछ मिलेगा,